सीखने के प्रतिफल (कक्षा 1 से 8 तक)*

कक्षा 1

हिंदी

बच्चे —

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे — कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना।
- सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।
- भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे — इन्ना, बिन्ना, तिन्ना।
- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और गैर-प्रिंट सामग्री (जैसे, चित्र या अन्य ग्राफ़िक्स) में अंतर करते हैं।
- चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं।
- संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं, जैसे — टॉफ़ी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफ़ी', 'लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट' बताना।
- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे — 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?/ इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है?/ 'नाम' में 'म' पर अँगुली रखो।
- परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे — मिड-डे मील का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनपसंद किताब का शीर्षक आदि) में रुचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे — केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों

* यह 'सीखने के प्रतिफल' एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित ब्रोशर से लिया गया है।

को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।

- हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
- स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे), अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवेंशनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं।
- स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं, जैसे— हाथ के बने पंखे का चित्र बनाकर उसके नीचे 'बीजना' (ब्रजभाषा, जो कि बच्चे की घर की भाषा हो सकती है।) लिखना।

गणित

बच्चे —

- विभिन्न वस्तुओं को भौतिक विशेषताओं, जैसे — आकृति, आकार तथा अन्य अवलोकनीय गुणों, जैसे— लुढ़कना, खिसकना के आधार पर समूहों में वर्गीकृत करते हैं।
- 1 से 20 तक की संख्याओं पर कार्य करते हैं।
  - 1 से 9 तक की संख्याओं का उपयोग करते हुए वस्तुओं को गिनते हैं।
  - 20 तक की संख्याओं को मूर्त रूप से, चित्रों और प्रतीकों द्वारा बोलकर गिनते हैं।
  - 20 तक संख्याओं की तुलना करते हैं, जैसे— यह बता पाते हैं कि कक्षा में लड़कियों की संख्या या लड़कों की संख्या ज़्यादा है।
- दैनिक जीवन में 1 से 20 तक संख्याओं का उपयोग जोड़ (योग) व घटाने में करते हैं।
  - मूर्त वस्तुओं की मदद से 9 तक की संख्याओं के जोड़ तथ्य बनाते हैं। उदाहरण के लिए, 3+3 निकालने के लिए 3 के आगे 3 गिनकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि 3+3=6
  - 1 से 9 तक संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया करते हैं, जैसे— 9 वस्तुओं के एक समूह में से 3 वस्तुएँ निकालकर शेष वस्तुओं को गिनते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि 9–3 = 6
  - 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए दिन प्रतिदिन में उपयोग होने वाले जोड़ तथा घटाव के प्रश्नों को हल करते हैं।
- 99 तक की संख्याओं को पहचानते हैं एवं संख्याओं को लिखते हैं।
- विभिन्न वस्तुओं/आकृतियों के भौतिक गुणों का अपनी भाषा में वर्णन करते हैं, जैसे— एक गेंद लुढ़कती है, एक बॉक्स खिसकता है आदि।
- छोटी लंबाइयों का अनुमान लगाते हैं, अमानक इकाइयों, जैसे— उँगली, बित्ता, भुजा, कदम आदि की सहायता से मापते हैं।

- आकृतियों तथा संख्याओं के पैटर्न का अवलोकन, विस्तार तथा निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए आकृतियों/वस्तुओं/संख्याओं की व्यवस्था, जैसे —

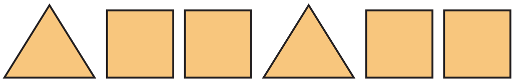

  –
  – 1, 2, 3, 4, 5, ...
  – 1, 3, 5, ...
  – 2, 4, 6, ...
  – 1, 2, 3, 1, 2, ..., 1, ..., 3, ...
- आकृतियों/संख्याओं का प्रयोग करते हुए किसी चित्र के संबंध में सामान्य सूचनाओं का संकलन करते हैं, लिखते हैं तथा उनका अर्थ बताते हैं। (जैसे किसी बाग के चित्र को देखकर विद्यार्थी विभिन्न फूलों को देखते हुए यह नतीजा निकालते हैं कि एक विशेष रंग के पुष्प अधिक हैं।)
- शून्य की अवधारणा को समझते हैं।

English

The learner—

- associates words with pictures.
- names familiar objects seen in the pictures.
- recognises letters and their sounds A–Z.
- differentiates between small and capital letters in print or Braille.
- recites poems/rhymes with actions.
- draws, scribbles in response to poems and stories.
- responds orally (in any language including sign language) to comprehension questions related to stories/poems.
- identifies characters and sequence of a story and asks questions about the story.
- carries out simple instructions such as ‘Shut the door’, ‘Bring me the book’, and such others.
- listens to English words, greetings, polite forms of expression, simple sentences, and responds in English or the home language or ‘signing’ (using sign language).
- listens to instructions and draws a picture.
- talks about self/situations/ pictures in English.
- uses nouns such as ‘boy’, ‘sun’, and prepositions like ‘in’, ‘on’, ‘under’, etc.
- produces words with common blends like “br” “fr” like ‘brother’, ‘frog’, etc.
- writes simple words like fan, hen, rat, etc.

कक्षा 2

हिंदी

बच्चे —

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे — जानकारी पाने के

लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।

- कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।
- देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाई जा रही सामग्री, जैसे — कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
- भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं, जैसे — एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने ....।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।
- अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
- चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे — चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे — 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं?
- हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
- स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काँटे), अक्षर-आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंनशनल राइटिंग) करते हैं।
- सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह-तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।

गणित

बच्चे —

- दो अंकों की संख्या के साथ कार्य करते हैं।
  - 99 तक की संख्याओं को पढ़ते तथा लिखते हैं।
  - दो अंकों की संख्याओं को लिखने एवं तुलना करने में स्थानीयमान का उपयोग करते हैं।
  - अंकों की पुनरावृत्ति के साथ और उसके बिना दो अंकों की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी संख्या को बनाते हैं।
  - दो अंकों की संख्याओं के जोड़ पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।
  - दो अंकों की संख्याओं को घटाने पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।
  - 3-4 नोट तथा सिक्कों (समान/असमान मूल्यवर्ग के) का प्रयोग करते हुए 100 तक की मान वाली खेल मुद्रा को दर्शाते हैं।
- मूलभूत 3d (त्रिविमीय) तथा 2d (द्विआयामी) आकृतियों की उनकी विशेषताओं के साथ चर्चा करते हैं।
  - 3d (त्रिविमीय) आकृतियों, जैसे— घनाभ, बेलन, शंकु, गोला आदि को उनके नाम से पहचानते हैं।
  - सीधी रेखा एवं घुमावदार रेखा के बीच अंतर करते हैं।
  - सीधी रेखा का खड़ी, पड़ी, तिरछी रेखा के रूप में प्रदर्शन करते हैं।
- लंबाइयों/दूरियों तथा बर्तनों की धारिता का अनुमान लगाते हैं तथा मापन के लिए एकसमान परंतु अमानक इकाइयों, जैसे—छड़/पेंसिल, कप/ चम्मच/ बाल्टी इत्यादि का प्रयोग करते हैं।
- सामान्य तुला का प्रयोग करते हुए वस्तुओं की तुलना 'से भारी'/'से हल्की' शब्दों का उपयोग करते हुए करते हैं।
- सप्ताह के दिनों तथा वर्ष के माह को पहचानते हैं।
- विभिन्न घटनाओं के घटित होने के समय (घंटों/ दिनों) के अनुसार क्रम से दिखाते हैं, जैसे – क्या कोई बच्चा घर की तुलना में स्कूल में ज़्यादा समय तक रहता है?
- संकलित आँकड़ों से निष्कर्ष निकालते हैं, जैसे— 'समीर के घर में उपयोग में आने वाले वाहनों की संख्या एंजिलीना के घर में उपयोग किए जाने वाली वाहनों की तुलना में अधिक है।'

English

The learner—

- sings songs or rhymes with action.
- responds to comprehension questions related to stories and poems, in home language or English or sign language, orally and in writing (phrases/ short sentences).

- identifies characters, and sequence of events in a story.
- expresses verbally her or his opinion and asks questions about the characters, storyline, etc., in English or home language.
- draws or writes a few words or short sentence in response to poems and stories.
- listens to English words, greetings, polite forms of expression, and responds in English/home language like 'How are you?', 'I'm fine, thank you.', etc.
- uses simple adjectives related to size, shape, colour, weight, texture such as 'big', 'small', 'round', 'pink', 'red', 'heavy' 'light', 'soft', etc.
- listens to short texts from children's section of newspapers, read out by the teacher.
- listens to instructions and draws a picture.
- uses pronouns related to gender like 'his/her/, 'he/she', 'it' and other pronouns like 'this/that', 'here/there' 'these/those', etc.
- uses prepositions like 'before', 'between etc.
- composes and writes simple, short sentences with space between words.

कक्षा 3

हिंदी

बच्चे —

- कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं।
- सुनी हुई रचनाओं की विषय-वस्तु, घघनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
- आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।

- तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे—शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे—दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे—पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।

गणित

बच्चे —

- तीन अंकों की संख्या के साथ कार्य करते हैं।
  - स्थानीय मान की मदद से 999 तक की संख्याओं को पढ़ते तथा लिखते हैं।
  - स्थानीय मान के आधार पर 999 तक की संख्याओं के मानों की तुलना करते हैं।
  - दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में 3 अंकों की संख्याओं का जोड़ तथा घटा करते हैं (दोबारा समूह बनाकर या बिना बनाएँ) (जोड़ का मान 999 से अधिक न हो)।
  - 2, 3, 4, 5 तथा 10 के गुणन तथ्य बनाते हैं तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों में उनका उपयोग करते हैं।
  - विभिन्न दैनिक परिस्थितियों का आकलन कर उचित संक्रियाओं का उपयोग करते हैं।
  - भाग के तथ्यों को बराबर समूह में बाँटने और बारंबार घटाने की प्रक्रिया के रूप में समझते हैं। उदाहरण के लिए, $12 \div 3$ में 12 को 3–3 के समूह में बाँटने पर कुल समूहों की संख्या 4 होती है अथवा 12 में से 3 को बारंबार घटाने की प्रक्रिया जो कि 4 बार में संपन्न होती है।
- छोटी राशियों को समूह अथवा बिना समूह के जोड़ते तथा घटाते हैं।
- मूल्य सूची तथा सामान्य बिल बनाते हैं।

- द्वि-आयामी आकृतियों की समझ अर्जित करते हैं।
  - कागज़ को मोड़कर, डॉट ग्रिड पर, पेपर कटिंग द्वारा बनी तथा सरल रेखा से बनी द्वि-आयामी आकृतियों को पहचानते हैं।
  - द्वि-आयामी आकृतियों का वर्णन भुजाओं की संख्या, कोनों की संख्या (शीर्ष) तथा विकर्णों की संख्या के आधार पर करते हैं, जैसे—किताब के कवर की आकृति में 4 भुजा, 4 कोने तथा 2 विकर्ण होते हैं।
  - दिए गए क्षेत्र को एक आकृति के टाइल की सहायता से बिना कोई स्थान छोड़े भरते हैं।
- मानक इकाइयों, जैसे—सेंटीमीटर, मीटर का उपयोग कर लंबाइयों तथा दूरियों का अनुमान एवं मापन करते हैं। इसके साथ ही इकाइयों में संबंध की पहचान करते हैं।
- मानक इकाइयों ग्राम, किलोग्राम तथा साधारण तुला के उपयोग से वस्तुओं का भार मापते हैं।
- अमानक इकाइयों का प्रयोग कर विभिन्न बर्तनों की धारिता की तुलना करते हैं।
- दैनिक जीवन की स्थितियों में ग्राम, किलोग्राम मापों को जोड़ते और घटाते हैं।
- कैलेंडर पर एक विशेष दिन तथा तारीख को पहचानाते हैं।
- घड़ी का उपयोग करते हुए घंटे तक समय पढ़ते हैं।
- सरल आकृतियों तथा संख्याओं के पैटर्न का विस्तार करते हैं।
- टेली चिह्न का प्रयोग करते हुए आँकड़ों का अभिलेखन करते हैं तथा उनको चित्रालेख के रूप में प्रस्तुति कर निष्कर्ष निकालते हैं।

पर्यावरण अध्ययन

बच्चे—

- सामान्य रूप से अवलोकन द्वारा पहचाने जाने वाले लक्षणों (आकार, रंग, बनावट, गंध) के आधार पर अपने आस-पास के परिवेश में उपलब्ध पेड़ों की पत्तियों, तनों एवं छाल को पहचानते हैं।
- अपने परिवेश में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं को उनके सामान्य लक्षणों (जैसे—आवागमन, वे स्थान जहाँ वे पाए/रखे जाते हैं, भोजन की आदतों, उनकी ध्वनियों) के आधार पर पहचानते हैं।
- परिवार के सदस्यों के साथ अपने तथा उनके आपस के संबंधों को समझते हैं।
- अपने घर/विद्यालय/आस-पास की वस्तुओं, संकेतों (बर्तन, चूल्हे, यातायात, संप्रेषण के साधन साइनबोर्ड आदि), स्थानों, (विभिन्न प्रकार के घर/आश्रय, बस स्टैंड, पेट्रोल पंप आदि), गतिविधियों (लोगों के कार्यों, खाना बनाने की प्रक्रिया आदि) को पहचानते हैं।
- विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों, जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के लिए पानी तथा भोजन की उपलब्धता एवं घर तथा परिवेश में पानी के उपयोग का वर्णन करते हैं।
- मौखिक/लिखित/अन्य तरीकों से परिवार के सदस्यों की भूमिका, परिवार का प्रभाव (गुणों/

लक्षणों/आदतों/व्यवहार) एवं साथ रहने की आवश्यकता का वर्णन करते हैं।

- समानताओं / असमानताओं (जैसे — रंग-रूप/रहने के स्थान / भोजन / आवागमन / पसंद-नापसंद/कोई अन्य लक्षण) के अनुसार वस्तुओं, पक्षियों, जंतुओं, लक्षणों, गतिविधियों को विभिन्न संवेदी अंगों के उपयोग द्वारा पहचान कर उनके समूह बनाते हैं।
- वर्तमान और पहले की (बड़ों के समय की) वस्तुओं और गतिविधियों (जैसे कपड़े/बर्तन/खेलों/लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्यों) में अंतर करते हैं।
- चिह्नों द्वारा/संकेतों द्वारा/बोलकर सामान्य मानचित्रों (घर/कक्षा कक्ष/विद्यालय के) में दिशाओं, वस्तुओं/स्थानों की स्थितियों की पहचान करते हैं।
- दैनिक जीवन की गतिविधियों में वस्तुओं के गुणों का अनुमान लगाते हैं, मात्राओं का आकलन करते हैं तथा उनकी संकेतों एवं अमानक इकाइयों (बित्ता/चम्मच/मग आदि) द्वारा जाँच करते हैं।
- भ्रमण के दौरान विभिन्न तरीकों से वस्तुओं/गतिविधियों/स्थानों के अवलोकनों, अनुभवों, जानकारियों को रिकॉर्ड करते हैं तथा पैटर्न्स (उदाहरण के लिए, चंद्रमा के आकार, मौसम आदि) को बताते हैं।
- चित्र, डिज़ाइन, नमूनों (Motifs), मॉडलों, वस्तुओं से ऊपर से, सामने से और 'साइड' से दृश्यों, सरल मानचित्रों (कक्षा कक्ष, घर/विद्यालय के भागों के) और नारों तथा कविताओं आदि की रचना करते हैं।
- स्थानीय, भीतर तथा बाहर खेले जाने वाले खेलों के नियम तथा सामूहिक कार्यों का अवलोकन करते हैं।
- अच्छे-बुरे स्पर्श, जेंडर के संदर्भ में परिवार में कार्य/खेल/भोजन के संबंध में रूढ़िबद्धताओं पर; परिवार तथा विद्यालय में भोजन तथा पानी के दुरुपयोग/अपव्यय पर अपनी आवाज़ उठाते हैं।
- अपने आस-पास के पौधों, जंतुओं, बड़ों, विशेष आवश्यकताओं वालों तथा विविध पारिवारिक व्यवस्था (रंग-रूप, क्षमताओं, पसंद / नापसंद तथा भोजन तथा आश्रय संबंधी मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता में विविधता) के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हैं।

English

The learner—

- recites poems individually/ in groups with correct pronounciation and intonation.
- performs in events such as role play/skit in English with appropriate expressions.
- reads aloud with appropriate pronunciation and pause.
- reads small texts in English with comprehension, i.e., identifies main idea, details and sequence and draws conclusions in English.

- expresses orally opinion / understanding about the story and characters in the story, in English/home language.
- responds appropriately to oral messages/ telephonic communication.
- writes/types dictation of words/ phrases/sentences.
- uses meaningful short sentences in English, orally and in writing, uses a variety of nouns, pronouns, adjectives and prepositions in context as compared to previous class.
- distinguishes between simple past and simple present tenses.
- identifies opposites like 'day/ night', 'close-open', and such others.
- uses punctuation such as question mark, full stop and capital letters appropriately.
- reads printed scripts on the classroom walls: poems, posters, charts, etc.
- writes 5–6 sentences in English on personal experiences/events using verbal or visual clues.
- uses vocabulary related to subjects like Maths, EVS, relevant to Class III.

कक्षा 4

हिंदी

बच्चे —

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।
- सुनी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं।
- विविध प्रकार की सामग्री (जैसे — समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं।
- पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल साहित्य/समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं।

- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं।
- पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।
- स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे—गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं।
- भाषा की बारीकियों, जैसे—शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।
- किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी आदि) के अनुसार लिखते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे—पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।

गणित

बच्चे —

- संख्याओं की संक्रियाओं का उपयोग दैनिक जीवन में करते हैं।
  - 2 तथा 3 अंकों की संख्याओं को गुणा करते हैं।
  - एक संख्या से दूसरी संख्या को विभिन्न तरीकों से भाग देते हैं, जैसे—चित्रों द्वारा (बिंदुओं का आलेखन कर), बराबर बाँटकर, बार-बार घटाकर, भाग तथा गुणा के अंतर्संबंधों का उपयोग करके।
  - दैनिक जीवन के संदर्भ में मुद्रा, लंबाई, भार, धारिता से संबंधित चार संक्रियाओं पर आधारित प्रश्न बनाते हैं तथा हल करते हैं।
- भिन्नों पर कार्य करते हैं—
  - एक दिए गए चित्र अथवा वस्तुओं के समूह में से आधा, एक चौथाई, तीन चौथाई भाग को पहचानते हैं।

- संख्याओं/संख्यांकों की मदद से भिन्नों को आधा, एक चौथाई तथा तीन चौथाई के रूप में प्रदर्शित करते हैं।
- किसी भिन्न की अन्य भिन्न से तुल्यता दिखाते हैं।

- अपने परिवेश से विभिन्न आकृतियों के बारे में समझ अर्जित करते हैं।
  - वृत्त के केंद्र, त्रिज्या तथा व्यास को पहचानते हैं।
  - उन आकृतियों को खोजते हैं जिनका उपयोग टाइल लगाने में किया जा सकता है।
  - दिए गए जाल (नेट) की मदद से घन/घनाभ बनाते हैं।
  - कागज़ मोड़कर/काटकर, स्याही के धब्बों द्वारा, परावर्तन सममिति प्रदर्शित करते हैं।
  - सरल वस्तुओं के शीर्ष दृश्य (Top View), सम्मुख दृश्य (Front View), साइड दृश्य (Side View) आदि का चित्रांकन करते हैं।
- सरल ज्यामितीय आकृतियों (त्रिभुज, आयत, वर्ग) का क्षेत्रफल तथा परिमाप एक दी हुई आकृति को इकाई मानकर ज्ञात करते हैं, जैसे—किसी टेबल की ऊपरी सतह को भरने के लिए एक जैसी कितनी किताबों की आवश्यकता पड़ेगी।
- मीटर को सेंटीमीटर एवं सेंटीमीटर को मीटर में बदलते हैं।
- किसी वस्तु की लंबाई, दो स्थानों के बीच की दूरी, विभिन्न वस्तुओं के भार, द्रव का आयतन आदि का अनुमान लगाते हैं तथा वास्तविक माप द्वारा उसकी पुष्टि करते हैं।
- दैनिक जीवन में लंबाई, दूरी, वज़न, आयतन तथा समय से संबंधित प्रश्नों को चार मूलभूत गणितीय संक्रियायों का उपयोग कर हल करते हैं।
- घड़ी के समय को घंटे तथा मिनट में पढ़ सकते हैं तथा उन्हें a.m. और p.m. के रूप में व्यक्त करते हैं।
- 24 घंटे की घड़ी को 12 घंटे की घड़ी से संबंधित करते हैं।
- दैनिक जीवन की घटनाओं में लगने वाले समय अंतराल की गणना, आगे/पीछे गिनकर अथवा जोड़ने/घटाने के माध्यम से करते हैं।
- गुणा तथा भाग में पैटर्न की पहचान कर सकते हैं। (9 के गुणज तक)
- सममिति (Symmetry) पर आधारित ज्यामिति पैटर्न का अवलोकन, पहचान कर उनका विस्तार करते हैं।
- इकट्ठा की गई जानकारी को सारणी, दंड आलेख के माध्यम से प्रदर्शित कर उनसे निष्कर्ष निकालते हैं।

पर्यावरण अध्ययन

बच्चे—

- आस-पास परिवेश में पाए जाने वाले फूलों, जड़ों तथा फलों के आकार, रंग, गंध, वे कैसे वृद्धि करते हैं तथा उनके अन्य सामान्य लक्षण क्या हैं—जानते और पहचानते हैं।

- पशु-पक्षियों की विभिन्न विशिष्टताओं, जैसे—चोंच, दाँत, पंजे, कान, रोम, घोंसला, रहने के स्थान आदि को पहचानते हैं।
- विस्तृत कुटुंब में अपने तथा परिवार के अन्य सदस्यों के आपसी रिश्तों को पहचानते हैं।
- चींटियों, मधुमक्खियों और हाथी जैसे जीवों के समूह में व्यवहार तथा पक्षियों द्वारा घोंसला बनाने की क्रिया का वर्णन करते हैं। परिवार में जन्म, विवाह, स्थानांतरण आदि से होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करते हैं।
- दैनिक जीवन के विभिन्न कौशल-युक्त कार्यों जैसे—खेती, भवन निर्माण, कला/शिल्प आदि का वर्णन करते हैं तथा पूर्वजों से मिली विरासत एवं प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका की व्याख्या करते हैं।
- दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं, जैसे—भोजन, जल, वस्त्र के उत्पादन तथा उनकी उपलब्धता; स्रोत से घर तक पहुँचने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए, फ़सल का खेत से मंडी और फिर घर तक पहुँचना; स्थानीय स्रोत से लेकर जल का घरों व पास-पड़ोस तक पहुँचना और उसका शुद्धिकरण होना।
- अतीत और वर्तमान की वस्तुओं तथा गतिविधियों में अंतर करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवहन, मुद्रा, आवास, पदार्थ, उपकरण, खेती और भवन-निर्माण के कौशल आदि।
- पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, वस्तुओं, अनुपयोगी वस्तुओं को उनके अवलोकन योग्य लक्षणों (स्वरूप, कान, बाल, चोंच, दाँत, तत्वों/सतह की प्रकृति) मूल प्रवृत्तियों (पालतू, जंगली, फल/सब्ज़ी/दालें/मसाले और उनका सुरक्षित काल), उपयोग (खाने योग्य, औषधीय, सजावट, कोई अन्य, पुन: उपयोग), गुण (गंध, स्वाद, पसंद आदि) के आधार पर समूहों में बाँटते हैं।
- गुणों, परिघटनाओं की स्थितियों आदि का अनुमान लगाते हैं, देशिक मात्राओं जैसे—दूरी, वज़न, समय, अवधि का मानक/स्थानीय इकाइयों (किलो, गज, पाव आदि) में अनुमान लगाते हैं और कारण तथा प्रभाव के मध्य संबंध स्थापन के सत्यापन हेतु साधारण उपकरणों/व्यवस्थाओं का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए वाष्पन, संघनन, विलयन, अवशोषण, दूरी के संबंध में पास/दूर, वस्तुओं के संबंध में आकृति व वृद्धि, फूलों, फलों तथा सब्ज़ियों के सुरक्षित रखने की अवधि आदि।
- वस्तुओं, गतिविधियों, घटनाओं, भ्रमण किए गए स्थानों—मेलों, उत्सवों, ऐतिहासिक स्थलों के अवलोकनों/अनुभवों/सूचनाओं को विविध तरीकों से रिकॉर्ड करते हैं तथा गतिविधियों, नक्शों, परिघटनाओं में विभिन्न पैटर्न का अनुमान लगाते हैं।
- वस्तुओं और स्थानों के संकेतों तथा स्थिति को पहचानते हैं। विद्यालय और पास-पड़ोस के भूमि संकेतों और नक्शे का इस्तेमाल करते हुए दिशाओं के लिए मार्गदर्शन देते हैं।
- साइनबोर्ड, पोस्टर्स, करेंसी (नोट/सिक्के), रेलवे टिकट/समय सारणी में दी गई जानकारियों का उपयोग करते हैं।

- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों/अनुपयोगी पदार्थों से कोलॉज, डिज़ाइन, मॉडल, रंगोली, पोस्टर, एलबम बनाते हैं और विद्यालय/ पास-पड़ोस के नक्शे और फ्लो चित्र आदि की रचना करते हैं।
- परिवार / विद्यालय / पास-पड़ोस में व्याप्त रुढ़िबद्ध सोच (पसंद, निर्णय लेने/समस्या निवारण संबंधी सार्वजनिक स्थलों के उपयोग, जल, मध्याह्न भोजन/सामूहिक भोज में जाति आधारित भेदभाव पूर्ण व्यवहार, बाल अधिकार (विद्यालय प्रवेश, बाल प्रताड़ना, बाल श्रमिक) संबंधी मुद्दों का अवलोकन करते हैं तथा इन मुद्दों पर अपनी बात कहते हैं।
- स्वच्छता, कम उपयोग, पुनः उपयोग, पुनः चक्रण के लिए तरीके सुझाते हैं। विभिन्न सजीवों (पौधों, जंतुओं, बुजुर्गों तथा विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों), संसाधनों (भोजन, जल तथा सार्वजनिक संपत्ति) की देखभाल करते हैं।

English

The learner—

- recites poems with appropriate expressions and intonation.
- enacts different roles in short skits.
- responds to simple instructions, announcements in English made in class/school.
- responds verbally/in writing in English to questions based on day-to-day life experiences, an article, story or poem heard or read.
- describes briefly, orally/in writing about events, places and/or personal experiences in English.
- reads subtitles on TV, titles of books, news headlines, pamphlets and advertisements.
- shares riddles and tongue-twisters in English.
- solves simple crossword puzzles, builds word chains, etc.
- infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context.
- uses dictionary to find out spelling and meaning.
- writes/types dictation of short paragraphs (7–8 sentences).
- uses punctuation marks appropriately in reading aloud with intonations and pauses such as question mark, comma, and full stop.
- uses punctuation marks appropriately in writing such as question mark, comma, full stop and capital letters.
- writes informal letters or messages with a sense of audience.
- uses linkers to indicate connections between words and sentences such as 'First', 'Next', etc.

- uses nouns, verbs, adjectives, and prepositions in speech and writing
- reads printed script on the classroom walls, notice board, in posters and in advertisements.
- speaks briefly on a familiar issue like conservation of water; and experiences of day to day life like visit to a zoo; going to a mela.
- presents orally and in writing the highlights of a given written text / a short speech / narration / video, film, pictures, photograph, etc.

कक्षा 5

हिंदी

बच्चे —

- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
- अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं।
- विविध प्रकार की सामग्री (अखबार, बाल साहित्य, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे — 'ईदगाह' कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है "मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ।"
- विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।
- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
- अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं, जैसे — किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना।

- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं।
- भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे — कारक-चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे – पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
- स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे — गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
- अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
- पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं। कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।

गणित

बच्चे —

- बड़ी संख्याओं पर कार्य करते हैं।
  - परिवेश में उपयोग की जाने वाली 1000 से बड़ी संख्याओं को पढ़ तथा लिखते हैं।
  - 1000 से बड़ी संख्याओं पर, स्थानीय मान को समझते हुए चार मूल संक्रियाएँ करते हैं।
  - मानक ऐल्गोरिद्म द्वारा एक संख्या से दूसरी संख्या को भाग देते हैं।
  - जोड़, घटाव, गुणन तथा भागफल का अनुमान लगाते हैं तथा विभिन्न तरीकों का प्रयोग कर उनकी पुष्टि करते हैं, जैसे — मानक ऐल्गोरिद्म का प्रयोग कर या किसी दी हुई संख्या को अन्य संख्याओं के जोड़ तथ्य के रूप में लिखकर संक्रिया का उपयोग करना। उदाहरण के लिए, 9450 को 25 से भाग देने हेतु 9000 को 25 से, 400 को 25 से तथा अंत में 50 को 25 से भाग देकर जितने भी भागफल प्राप्त हों उन सभी को जोड़कर उत्तर प्राप्त करते हैं।
- भिन्न के बारे में समझ अर्जित करते हैं।
  - समूह के हिस्से के लिए भिन्न संख्या बनाते हैं।
  - एक दिए गए भिन्न के समतुल्य भिन्न की पहचान कर सकते हैं तथा समतुल्य भिन्न बनाते हैं।

– दिए गए भिन्नों 1/2, 1/4, 1/5 को दशमलव भिन्न में तथा दशमलव भिन्न को भिन्न रूप में लिखते हैं, जैसे — लंबाई और मुद्रा की इकाइयों का उपयोग ₹10 का आधा ₹5 होगा।
– भिन्न को दशमलव संख्या तथा दशमलव संख्या को भिन्न में लिखते हैं।

- कोणों तथा आकृतियों की अवधारणा की खोजबीन करते हैं।
  – कोणों को समकोण, न्यून कोण, अधिक कोण में वर्गीकृत करते हैं, उन्हें बना सकते हैं व खाका खींचते (ट्रेस) हैं।
  – अपने परिवेश में उन 2d आकृतियों को पहचानते हैं, जिसमें घूर्णन तथा परावर्तन सममितता हो, जैसे — अक्षर तथा आकृति।
  – नेट का प्रयोग करते हुए घन, बेलन, शंकु बनाते हैं।
- सामान्यतः प्रयोग होने वाली लंबाई, भार, आयतन की बड़ी तथा छोटी इकाइयों में संबंध स्थापित करते हैं तथा बड़ी इकाइयों को छोटी व छोटी इकाइयों को बड़ी इकाई में बदलते हैं।
- ज्ञात इकाइयों में किसी ठोस वस्तु का आयतन ज्ञात करते हैं, जैसे — एक बाल्टी का आयतन जग के आयतन का 20 गुना है।
- पैसा, लंबाई, भार, आयतन तथा समय अंतराल से संबंधित प्रश्नों में चार मूल गणितीय संक्रियाओं का उपयोग करते हैं।
- त्रिभुजीय संख्याओं तथा वर्ग संख्याओं के पैटर्न पहचानते हैं।
- दैनिक जीवन से संबंधित विभिन्न आँकड़ों को एकत्र करते हैं तथा सारणीबद्ध कर सकते हैं एवं दंड आलेख खींचकर उनकी व्याख्या करते हैं।

पर्यावरण अध्ययन

बच्चे —

- पशु-पक्षियों की अति संवेदी इंद्रियों और असाधारण लक्षणों (दृष्टि, गंध, श्रवण, नींद, ध्वनि आदि) के आधार पर ध्वनि तथा भोजन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया की व्याख्या करते हैं।
- दैनिक जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं (भोजन, जल आदि) और उन्हें उपलब्ध कराने की प्रक्रिया तथा तकनीकी को समझते हैं, उदाहरण के लिए, खेत में उत्पन्न वस्तुओं का रसोई घर पहुँचना, अनाज का रोटी बनना, संरक्षण तकनीकों, जल स्रोतों का पता लगाने और जल एकत्रित करने की तकनीक को समझाते हैं।
- पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं तथा मनुष्यों में परस्पर निर्भरता का वर्णन करते हैं। (उदाहरण के लिए, आजीविका के लिए समुदायों की जीव-जंतुओं पर निर्भरता और साथ ही बीजों के प्रकीर्णन में जीव-जंतुओं और मनुष्य की भूमिका आदि।)
- दैनिक जीवन में उपयोगी विभिन्न संस्थाओं (बैंक, पंचायत, सहकारी, पुलिस थाना आदि।) की भूमिका तथा कार्यों का वर्णन करते हैं।
- भू-क्षेत्रों, जलवायु, संसाधनों (भोजन, जल, आश्रय, आजीविका) तथा सांस्कृतिक जीवन में आपसी संबंध स्थापित करते हैं। (उदाहरण के लिए, दूरस्थ तथा कठिन क्षेत्रों जैसे गर्म/ठंडे मरुस्थलों में जीवन।)

- वस्तुओं, सामग्री तथा गतिविधियों का उनके लक्षणों तथा गुणों जैसे—आकार, स्वाद, रंग, स्वरूप, ध्वनि आदि विशिष्टताओं के आधार पर समूह बनाते हैं।
- वर्तमान तथा अतीत में हमारी आदतों/पद्धतियों, प्रथाओं, तकनीकों में आए अंतर का सिक्कों, पेंटिंग, स्मारक, संग्रहालय के माध्यम से तथा बड़ों से बातचीत कर पता लगाते हैं। (उदाहरण के लिए, फ़सल उगाने, संरक्षण, उत्सव, वस्त्रों, वाहनों, सामग्रियों या उपकरणों, व्यवसायों, मकान तथा भवनों, भोजन बनाने, खाने तथा कार्य करने के संबंध में।)
- परिघटनाओं की स्थितियों और गुणों का अनुमान लगाते हैं। स्थान संबंधी मात्रकों, दूरी, क्षेत्रफल, आयतन, भार का अनुमान लगाते हैं और साधारण मानक इकाइयों द्वारा व्यक्त तथा साधारण उपकरणों/सेटअप द्वारा उनके सत्यापन की जाँच करते हैं। (उदाहरण के लिए, तैरना, डूबना, मिश्रित होना, वाष्पन, अंकुरण, नष्ट होना, श्वास लेना, स्वाद आदि।)
- अवलोकनों, अनुभवों तथा जानकारियों को एक व्यवस्थित क्रम में रिकॉर्ड करते हैं (उदाहरण के लिए, सारणी, आकृतियों, बारग्राफ़, पाई चार्ट आदि के रूप में) और कारण तथा प्रभाव में संबंध स्थापित करने हेतु गतिविधियों, परिघटनाओं में पैटर्नों का अनुमान लगाते हैं (उदाहरण के लिए, तैरना, डूबना, मिश्रित होना, वाष्पन, अंकुरण, नष्ट होना, खराब हो जाना)।
- संकेतों, दिशाओं, विभिन्न वस्तुओं की स्थितियों, इलाकों के भूमि चिह्नों और भ्रमण किए गए स्थलों को मानचित्र में पहचानते हैं तथा विभिन्न स्थलों की स्थितियों के संदर्भ में दिशाओं का अनुमान लगाते हैं।
- आस-पास भ्रमण किए गए स्थानों के पोस्टर, डिज़ाइन, मॉडल, ढाँचे, स्थानीय सामग्रियाँ, चित्र, नक्शे विविध स्थानीय और बेकार वस्तुओं से बनाते हैं और कविताएँ/नारे/यात्रा वर्णन लिखते हैं।
- अवलोकन और अनुभव किए गए मुद्दों पर आवाज़ उठाकर अपने मत व्यक्त करते हैं और व्यापक सामाजिक मुद्दों को समाज में प्रचलित रीतियों/घटनाओं, जैसे—पहुँच के लिए भेदभाव, संसाधनों के स्वामित्व, प्रवास/विस्थापन/परिवर्जन और बाल अधिकार आदि से जोड़ते हैं।
- स्वच्छता, स्वास्थ्य, अपशिष्टों के प्रबंधन, आपदा/आपातकालीन स्थितियों से निपटने के संबंध में तथा संसाधानों (भूमि, ईंधन, वन, जंगल इत्यादि) की सुरक्षा हेतु सुझाव देते हैं तथा सुविधावंचित के प्रति संवेदना दर्शाते हैं।

English

The learner—

- answers coherently in written or oral form to questions in English based on day-to-day life experiences, unfamiliar story, poem heard or read.
- recites and shares English songs, poems, games, riddles, stories, tongue twisters, etc., recites and shares with peers and family members.

- acts according to instructions given in English, in games/ sports, such as 'Hit the ball!' 'Throw the ring.' 'Run to the finish line!', etc.
- reads independently in English storybooks, news items / headlines,advertisements, etc., talks about it, and composes short paragraphs.
- conducts short interviews of people around him, e.g., interviewing grandparents, teachers, school librarian, gardener, etc.
- uses meaningful grammatically correct sentences to describe and narrate incidents; and for framing questions.
- uses synonyms such as 'big/ large', 'shut/ close', and antonyms like inside/outside, light/dark from clues in context.
- reads text with comprehension, locates details and sequence of events.
- connects ideas that he/she has inferred, through reading and interaction, with his/her personal experiences.
- takes dictation for different purposes, such as lists, paragraphs, dialogues, etc.
- uses the dictionary for reference.
- identifies kinds of nouns, adverbs; differentiates between simple past and simple present verbs.
- writes paragraphs in English from verbal, visual clues, with appropriate punctuation marks and linkers.
- writes a 'mini biography' and 'mini autobiography'.
- writes informal letters, messages and e-mails.
- reads print in the surroundings (advertisements, directions, names of places, etc.), understands and answers queries.
- attempts to write creatively (stories, poems, posters, etc.).
- writes and speaks on peace, equality, etc., suggesting personal views.
- appreciates either verbally/ in writing the variety in food, dress, customs and festivals as read/heard in his/her day-to day life, in storybooks/heard in narratives/seen in videos, films, etc.

कक्षा 6

हिंदी

बच्चे—

- विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे—बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के

अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

- सुनी, देखी गई बातों, जैसे—स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं।
- देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं/मुद्दों पर बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे—किसी कहानी को आगे बढ़ाना।
- रेडियो, टी.वी., अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं, जैसे—आँखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा-अनुभव।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में जानते हुए चर्चा करते हैं।
- अपने से भिन्न भाषा, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
- सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषयवस्तु का अनुमान लगाते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे—कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि।
- विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।
- हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।
- नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।
- विविध कलाओं, जैसे—हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
- दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को ज़रूरत के अनुसार लिखना, जैसे—सार्वजनिक स्थानों (जैसे—चौराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर-पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी को लिखित या ब्रेल भाषा में व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम-चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं।

- विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

गणित

बच्चे —

- बड़ी संख्याओं से संबंधित समस्याओं को उचित संक्रियाओं (जोड़, घटा, गुणन, भाग) के प्रयोग द्वारा हल करते हैं।
- पैटर्न के आधार पर संख्याओं को सम, विषम, अभाज्य संख्या, सह अभाज्य संख्या आदि के रूप में वर्गीकरण कर पहचानते हैं।
- विशेष स्थिति में महत्तम समापवर्तक या लघुत्तम समापवर्तक का उपयोग करते हैं।
- पूर्णांकों के जोड़ तथा घटा से संबंधित समस्याओं को हल करते हैं।
- पैसा, लंबाई, तापमान आदि से संबंधित स्थितियों में भिन्न तथा दशमलव का प्रयोग करते हैं, जैसे — 7½ मीटर कपड़ा, दो स्थानों के बीच दूरी 112.5 किलोमीटर आदि।
- दैनिक जीवन की समस्याओं, जिनमें भिन्न तथा दशमलव का जोड़/घटा हो, को हल करते हैं।
- किसी स्थिति के सामान्यीकरण हेतु चर राशि का विभिन्न संक्रियाओं के साथ प्रयोग करते हैं, जैसे — किसी आयत का परिमाप जिसकी भुजाएँ x इकाई तथा 3 इकाई हैं, 2(x+3) इकाई होगा।
- अलग-अलग स्थितियों में अनुपात का प्रयोग कर विभिन्न राशियों की तुलना करते हैं, जैसे — किसी विशेष कक्षा में लड़कियों एवं लड़कों का अनुपात 3:2 है।
- एकक विधि का प्रयोग विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए करते हैं, जैसे — यदि 1 दर्जन कॉपियों की कीमत दी गई हो तो 7 कॉपियों की कीमत ज्ञात करने हेतु पहले 1 कॉपी की कीमत ज्ञात करते हैं।
- ज्यामितीय अवधारणाओं, जैसे — रेखा, रेखाखंड, खुली एवं बंद आकृतियों, कोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त आदि का अपने परिवेश के उदाहरणों द्वारा वर्णन करते हैं।
- कोणों की समझ को निम्नानुसार व्यक्त करते हैं —
  - अपने परिवेश में कोणों के उदाहरण की पहचान करते हैं।
  - कोणों को उनके माप के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।
  - 45°, 90°, 180° को संदर्भ कोण के रूप में लेकर अन्य कोणों के माप का अनुमान लगाते हैं।
- रैखिक सममिति के बारे में अपनी समझ निम्नानुसार व्यक्त करते हैं —
  - द्वि-आयामी (2d) आकृतियों में वह सममित आकृतियाँ पहचानते हैं, जिनमें एक या अधिक सममित रेखाएँ हैं।
  - सममित द्वि-आयामी (2d) आकृतियों की रचना करते हैं।
- त्रिभुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे — भुजाओं के आधार पर विषमबाहु त्रिभुज, समद्विबाहु त्रिभुज, समबाहु त्रिभुज आदि।

- चतुर्भुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करते हैं।
- अपने परिवेश में स्थित विभिन्न 3D वस्तुओं की पहचान करते हैं, जैसे—गोला, घन, घनाभ, बेलन, शंकु आदि।
- 3D वस्तुओं/आकृतियों के किनारे, शीर्ष, फलक का वर्णन कर उदाहरण देते हैं।
- आयताकार वस्तुओं का परिमाप तथा क्षेत्रफल ज्ञात करते हैं, जैसे—कक्षा का फ़र्श, चॉक के डिब्बे की ऊपरी सतह का परिमाप तथा क्षेत्रफल।
- दी गई/ संकलित की गई सूचना को सारणी, चित्रालेख, दंड आलेख के रूप में प्रदर्शित कर व्यवस्थित करते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं, जैसे—विगत छह माह में किसी परिवार के विभिन्न सामग्रियों पर हुए खर्च को।

विज्ञान

- पदार्थों और जीवों, जैसे—वनस्पति रेशे, पुष्प, आदि को अवलोकन योग्य विशेषताओं, जैसे—बाह्य आकृति, बनावट, कार्य, गंध, आदि के आधार पर पहचान करते हैं।
- पदार्थों और जीवों में गुणों, संरचना एवं कार्यों के आधार पर भेद करते हैं, जैसे—तंतु (रेशे) एवं धागे में, मूसला एवं रेशेदार जड़ में, विद्युत-चालक एवं विद्युत-रोधक में आदि।
- पदार्थों, जीवों और प्रक्रियाओं को अवलोकन योग्य गुणों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे—पदार्थों को विलेय, अविलेय, पारदर्शी, पारभासी एवं अपारदर्शी के रूप में; परिवर्तनों को, उत्क्रमणीय हो सकते हैं एवं उत्क्रमणीय नहीं हो सकते, के रूप में; पौधों को शाक, झाड़ी, वृक्ष, विसर्पी लता, आरोही के रूप में; आवास के घटकों को जैव एवं अजैव घटकों के रूप में; गति को सरल रेखीय, वर्तुल एवं आवर्ती के रूप में आदि।
- प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने के लिये सरल छानबीन करते हैं, जैसे— पशु चारे में पोषक तत्व कौन से हैं? क्या समस्त भौतिक परिवर्तन उत्क्रमणीय किये जा सकते हैं? क्या स्वतंत्रतापूर्वक लटका हुआ चुंबक किसी विशेष दिशा में अवस्थित हो जाता है?
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं को कारणों से संबंधित करते हैं, जैसे—भोजन और अभावजन्य रोग; वनस्पति एवं जंतुओं का आवास के साथ अनुकूलन; प्रदूषकों के कारण वायु की गुणवत्ता आदि।
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं की व्याख्या करते हैं, जैसे—पादप रेशों का प्रसंस्करण, पौधों एवं जंतुओं में गति, छाया का बनना, समतल दर्पण से प्रकाश का परावर्तन, वायु के संघटन में विभिन्नता, वर्मीकंपोस्ट (कृमिकपोस्ट) का निर्माण आदि।
- भौतिक राशियों, जैसे—लंबाई का मापन करते हैं तथा मापन को एस.आई. मात्रक (अंतर्राष्ट्रीय मात्रक-प्रणाली) में व्यक्त करते हैं।
- जीवों और प्रक्रियाओं के नामांकित चित्र/फ़्लो चार्ट बनाते हैं, जैसे—पुष्प के भाग, संधियाँ, निस्यंदन (फिल्टर करना), जल चक्र आदि।
- अपने परिवेश की सामग्रियों का उपयोग कर मॉडलों का निर्माण करते हैं और उनकी कार्यविधि

की व्याख्या करते हैं, जैसे—पिनहोल कैमरा, पेरिस्कोप, विद्युत टॉर्च आदि।

- वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ को दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं, जैसे—संतुलित भोजन हेतु भोज्य पदार्थों का चयन करना, पदार्थों को अलग करना, मौसम के अनुकूल कपड़ों का चयन करना, दिक्सूची के प्रयोग द्वारा दिशा का ज्ञान करना, भारी वर्षा/अकाल की परिस्थितियों से निपटने की प्रक्रिया में सुझाव देना आदि।
- पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रयास करते हैं, जैसे—भोजन, जल, विद्युत के अपव्यय और कचरे के उत्पादन को न्यूनतम करना; वर्षा जल संग्रहण; पौधों की देखभाल अपनाने हेतु जागरुकता फैलाना आदि।
- डिज़ाइन बनाने, योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं।
- ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति, जैसे मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं।

सामाजिक विज्ञान

- तारों, ग्रहों, उपग्रहों जैसे सूर्य, पृथ्वी तथा चंद्रमा में अंतर करते हैं।
- पृथ्वी को एक विशिष्ट खगोलीय पिंड के रूप में समझते हैं, क्योंकि पृथ्वी के विभिन्न भागों विशेष रूप से जैवमंडल में जीवन पाया जाता है।
- दिन और रात तथा ऋतुओं की समझ प्रदर्शित करते हैं।
- समतल सतह पर दिशाएँ अंकित करते हैं तथा विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिह्नित करते हैं।
- अक्षांशों और देशांतरों, जैसे–ध्रुवों, विषुवत वृत्त, कर्क व मकर रेखाओं, भारत के राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों अन्य पड़ोसी देशों को ग्लोब एवं विश्व के मानचित्र पर पहचानते हैं।
- भारत के मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों, जैसे—पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, मरुस्थल इत्यादि को अंकित करते हैं।
- अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बनाते हैं और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखाते हैं।
- ग्रहण से संबंधित अंधविश्वासों को तर्कपूर्ण रूप से परखते हैं।
- बच्चे विभिन्न प्रकार के स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक आदि) को पहचानते हैं और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करते हैं।
- महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत के एक रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं।
- प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं और उनके विकास के बारे में बात करते हैं।
- महत्वपूर्ण साम्राज्यों, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं, जैसे—अशोक के शिलालेख, गुप्त सिक्के, पल्लवों द्वारा निर्मित रथ मंदिर आदि।

- प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलावों की व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए, शिकार-संग्रहण की अवस्था, कृषि की शुरुआत, सिंधु नदी किनारे के आरंभिक शहर आदि और एक स्थान पर हुए बदलावों को दूसरे स्थान पर हुए बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।
- उस समय की साहित्यिक रचनाओं में वर्णित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्वों का वर्णन करते हैं।
- धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में भारत का बाहर के क्षेत्रों के साथ संपर्क और उस संपर्क के प्रभावों के बारे में बताते हैं।
- संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में, जैसे—खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं का ज्ञान आदि में भारत के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हैं।
- विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित जानकारी का समन्वय करते हैं।
- प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।
- अपने आस-पास की मानवीय विविधताओं के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं।
- अपने आस-पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के भेदभाव को पहचानते हैं और उनकी प्रकृति एवं स्रोत को समझते हैं।
- समानता और असमानता के विभिन्न रूपों में भेद करते हैं और उन के प्रति स्वस्थ भाव रखते हैं।
- सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं, विशेष कर स्थानीय स्तर पर।
- सरकार के विभिन्न स्तरों-स्थानीय, प्रांतीय और संघीय को पहचानते हैं।
- स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय शासकीय निकायों के कार्यों का वर्णन करते हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चल रहे विभिन्न रोज़गारों की उपलब्धता के कारणों का वर्णन करते हैं।

English

The learner—

- participates in activities in English like role play, group discussion, debate, etc.
- recites and shares poems, songs, jokes, riddles, tongue twisters, etc.
- responds to oral messages, telephonic communication in English and communicates them in English or home language.
- responds to announcements and instructions made in class, school assembly, railway station and in other public places.
- reads a variety of texts in English / Braille and identifies main ideas, characters, sequence of ideas and events and relates with his/her personal experiences.
- reads to seek information from notice board, newspaper, Internet, tables, charts, diagrams and maps, etc.

- responds to a variety of questions on familiar and unfamiliar texts verbally and in writing.
- uses synonyms, antonyms appropriately, deduces word meanings from clues in context while reading a variety of texts.
- writes words / phrases / simple sentences and short paragraphs as dictated by the teacher.
- uses meaningful sentences to describe/ narrate factual/ imaginary situations in speech and writing.
- refers to dictionary to check meaning and spelling, and to suggested websites for information.
- writes grammatically correct sentences for a variety of situations, using noun, pronoun, verb, adverb, determiners, etc.
- drafts, revises and writes short paragraphs based on verbal, print and visual clues.
- writes coherently with focus on appropriate beginning, middle and end in English/Braille.
- writes messages, invitations, short paragraphs and letters (formal and informal) and with a sense of audience.
- visits a language laboratory.
- writes a Book Review.

कक्षा 7

हिंदी

बच्चे —

- विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं।
- किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।
- किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक / सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं/ परिचर्चा करते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं।
- विविधकलाओं,जैसे — हस्तकला,वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।
- विभिन्न स्थानीय सामाजिक एवं प्राकृतिक मुद्दों/ घटनाओं के प्रति अपनी तार्किक प्रतिक्रिया देते हैं, जैसे — बरसात के दिनों में हरा भरा होना? विषय पर चर्चा।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों, जैसे — जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे

में मौखिक रूप से अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।

- सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे — वर्णनात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे — शब्दकोश,मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
- विविध कलाओं, जैसे — हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे — किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग-आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल-रेल जैसे प्रयोग।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे — अपने गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार-पत्र/पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं।
- विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम-चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों, जैसे — काल, क्रिया विशेषण, शब्द-युग्म आदि का प्रयोग करते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों, जैसे — जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।
- भित्ति पत्रिका/पत्रिका आदि के लिए तरह-तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उनका संपादन करते हैं।

गणित

बच्चे —

- दो पूर्णांकों का गुणन/भाग करते हैं।
- भिन्नों के भाग तथा गुणन की व्याख्या करते हैं।

- उदाहरण के लिए $\frac{2}{3} \times \frac{4}{5}$ की व्याख्या $\frac{2}{3}$ का $\frac{4}{5}$ के रूप में करते हैं। इसी प्रकार $\frac{1}{2} \div \frac{1}{4}$ की व्याख्या इस रूप में करते हैं कि कितने $\frac{1}{4}$ मिलकर $\frac{1}{2}$ बनाते हैं?
- परिमेय संख्या से संबंधित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।
- दैनिक जीवन से संबंधित समस्याओं, जिनमें परिमेय संख्या भी शामिल हैं, को हल करते हैं।
- बड़ी संख्याओं के गुणन तथा भाग को सरल करने हेतु संख्याओं के घातांक रूप का प्रयोग करते हैं।
- दैनिक जीवन की समस्याओं को सरल समीकरण के रूप में प्रदर्शित करते हैं तथा हल करते हैं।
- बीजीय व्यंजकों का योग तथा अंतर ज्ञात करते हैं।
- उन राशियों को पहचानते हैं जो समानुपात में हैं, जैसे — विद्यार्थी यह बता सकते हैं कि 15, 45, 40, 120 समानुपात में हैं, क्योंकि $\frac{15}{45}$ का मान $\frac{40}{120}$ के बराबर है।
- प्रतिशत को भिन्न तथा दशमलव में एवं भिन्न तथा दशमलव को प्रतिशत में रूपांतरित करते हैं।
- लाभ/हानि प्रतिशत तथा साधारण ब्याज में दर प्रतिशत की गणना करते हैं।
- कोणों के जोड़े को रेखीय, पूरक, संपूरक, आसन्न कोण, शीर्षाभिमुख कोण के रूप में वर्गीकृत करते हैं तथा एक कोण का मान ज्ञात होने पर दूसरे कोण का ज्ञात करते हैं।
- तिर्यक रेखा द्वारा दो रेखाओं को काटने से बने कोणों के जोड़े के गुणधर्म का सत्यापन करते हैं।
- यदि त्रिभुज के दो कोण ज्ञात हो तो तीसरे अज्ञात कोण का मान ज्ञात करते हैं।
- त्रिभुजों के बारे में दी गई सूचना, जैसे — SSS, SAS, ASA, RHS के आधार पर त्रिभुजों की सर्वांगसमता की व्याख्या करते हैं।
- पैमाना (स्केल) तथा परकार की सहायता से एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से रेखा के समांतर एक अन्य रेखा खींचते हैं।
- एक बंद आकृति के अनुमानित क्षेत्रफल की गणना इकाई वर्ग ग्रिड/ ग्राफ़ पेपर के द्वारा करते हैं।
- आयत तथा वर्ग द्वारा घिरे क्षेत्र के क्षेत्रफल की गणना करते हैं।
- दैनिक जीवन के साधारण आँकड़ों के लिए विभिन्न प्रतिनिधि मानों जैसे समांतर माध्य, मध्यिका, बहुलक की गणना करते हैं।
- वास्तविक जीवन की स्थितियों में परिवर्तनशीलता को पहचानते हैं, जैसे – विद्यार्थियों की ऊँचाइयों में परिवर्तन, घटनाओं के घटित होने की अनिश्चितता, जैसे — सिक्के को उछालना।
- दंड आलेख के द्वारा आँकड़ों की व्याख्या करते हैं, जैसे — गर्मियों में बिजली की खपत सर्दियों के मौसम से ज़्यादा होती है, किसी टीम द्वारा प्रथम 10 ओवर में बनाए गए रनों का स्कोर आदि।

विज्ञान

बच्चे—

- पदार्थों और जीवों, जैसे—जंतु रेशे, दाँतों के प्रकार, दर्पण और लेंस, आदि को अवलोकन योग्य विशेषताओं, जैसे—छवि/आकृति, बनावट, कार्य आदि के आधार पर पहचान करते हैं।
- पदार्थों और जीवों में गुणों, संरचना एवं कार्यों के आधार पर भेद करते हैं, जैसे—विभिन्न जीवों में पाचन, एकलिंगी व द्विलिंगी पुष्प, ऊष्मा के चालक व कुचालक, अम्लीय, क्षारकीय व उदासीन पदार्थ, दर्पणों व लेंसों से बनने वाले प्रतिबिंब आदि।
- पदार्थों, जीवों और प्रक्रियाओं को अवलोकन योग्य गुणों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे—पादप व जंतु रेशे तथा भौतिक व रासायनिक परिवर्तन।
- प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने के लिये सरल छानबीन करते हैं, जैसे—क्या फूलों (रंगीन फूलों) के निकर्ष का उपयोग अम्लीय-क्षारीय सूचकों के रूप में किया जा सकता है? क्या हरे रंग से भिन्न रंग वाले पत्तों में भी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया होती है? क्या सफ़ेद रंग का प्रकाश बहुत से रंगों से मिलकर बनता है? आदि।
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं को कारणों से संबंधित करते हैं, जैसे—हवा की गति का वायु दाब से, मिट्टी के प्रकार का फ़सल उत्पादन से, मानव गतिविधियों से जल स्तर के कम होने से आदि।
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं की व्याख्या करते है, जैसे—जंतु रेशों का प्रसंस्करण, ऊष्मा संवहन के तरीके, मानव व पादपों के विभिन्न अंग व तंत्र, विद्युत धारा के ऊष्मीय व चुंबकीय प्रभाव आदि।
- रासायनिकअभिक्रियाओं,जैसे—अम्ल-क्षारक अभिक्रिया, संक्षारण, प्रकाश संश्लेषण, श्वसन, आदि के शब्द-समीकरण लिखते हैं।
- ताप, स्पंद दर, गतिमान पदार्थों की चाल, सरल लोलक की समय गति आदि के मापन एवं गणना करते हैं।
- नामांकित चित्र/फ़्लो चार्ट बनाते हैं, जैसे—मानव व पादप अंग-तंत्र, विद्युत परिपथ, प्रयोगशाला व्यवस्थाएँ, रेशम के कीड़े के जीवन-चक्र आदि।
- ग्राफ़ बनाते है और उसकी व्याख्या करते हैं, जैसे—दूरी-समय का ग्राफ़।
- अपने परिवेश की सामग्री का उपयोग कर मॉडलों का निर्माण करते हैं और उनकी कार्यविधि की व्याख्या करते हैं, जैसे—स्टेथोस्कोप, एनीमोमीटर, इलेक्ट्रोमैगनेट, न्यूटन की कलर डिस्क आदि।
- वैज्ञानिक अन्वेषणों की कहानियों पर परिचर्चा करते हैं और उनका महत्त्व समझते हैं।
- वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ को दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं, जैसे—अम्लीयता से निपटना, मिट्टी की जाँच एवं उसका उपचार, संक्षारण को रोकने के विभिन्न उपाय, कायिक प्रवर्धन के द्वारा कृषि, दो अथवा दो से अधिक विद्युत सेलों का विभिन्न विद्युत उपकरणों में संयोजन, विभिन्न आपदाओं के दौरान व उनके

बाद उनसे निपटना, प्रदूषित पानी के पुनःउपयोग हेतु उपचारित करने की विधियाँ सुझाना आदि।

- पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रयास करते हैं, जैसे — सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता प्रबंधन हेतु अच्छी आदतों का अनुसरण, प्रदूषकों के उत्पादन को न्यूनतम करना, मिट्टी के क्षरण को रोकने के लिए अधिकाधिक वृक्ष लगाना, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग करने के परिणामों के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाना आदि।
- डिज़ाइन बनाने, योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं।
- ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति जैसे मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं।

सामाजिक विज्ञान

बच्चे —

- चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों, शैलों के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचानते हैं।
- ग्लोब अथवा विश्व के मानचित्र पर विभिन्न जलवायु प्रदेशों के वितरण तथा विस्तार को बताते हैं।
- विभिन्न आपदाओं, जैसे — भूकंप, बाढ़, सूखा आदि के दौरान किए जाने वाले बचाव कार्य को विस्तार से बताते हैं।
- विभिन्न कारकों द्वारा निर्मित स्थलरूपों के बनने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।
- वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन करते हैं।
- पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक संबंधों का वर्णन करते हैं।
- अपने आस-पास प्रदूषण के कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा उन्हें कम करने के उपायों की सूची बनाते हैं।
- विभिन्न जलवायु एवं स्थलरूपों में पाए जाने वाले पादपों एवं जंतुओं की विभिन्नताओं के कारणों को बताते हैं।
- आपदाओं तथा विपत्ति के कारकों पर विचार व्यक्त करते हैं।
- प्राकृतिक संसाधनों, जैसे — वायु, जल, ऊर्जा, पादप एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।
- विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।
- विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं।
- इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
- मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।
- लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का

वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए, जनजातियों, खानाबदोशों और बंजारों की।

- मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।
- विभिन्न राज्यों द्वारा सैन्य नियंत्रण हेतु अपनाए गए प्रशासनिक उपायों और रणनीतियों का विश्लेषण करते हैं, जैसे — ख़िलजी, तुगलक़, मुगल आदि।
- विभिन्न शासकों की नीतियों की तुलना करते हैं।
- मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण में इस्तेमाल की गईं विशिष्ट शैलियों और तकनीक की विशेषताओं का उदाहरणों के साथ वर्णन करते हैं।
- उन कारकों का विश्लेषण करते हैं, जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफ़ी) का उद्‌भव हुआ।
- भक्ति और सूफ़ी संतों के काव्य में कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं।
- लोकतंत्र में समानता का महत्त्व समझते हैं।
- राजनीतिक समानता, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के बीच अंतर करते हैं।
- समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं।
- स्थानीय सरकार और राज्य सरकार के बीच अंतर करते हैं।
- विधान सभा के चुनाव की प्रक्रिया का विभिन्न चरणों में वर्णन करते हैं।
- राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र देखते हैं और स्थानीय विधायक का नाम बताते हैं।
- समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।
- भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाली विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं को पहचानते हैं।
- विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते हैं।
- समाचार-पत्रों के समुचित उदाहरणों से मीडिया के कामकाज की व्याख्या करते हैं।
- विज्ञापन बनाते हैं।
- विभिन्न प्रकार के बाज़ारों में अंतर बताते हैं।
- विभिन्न बाज़ारों से होकर वस्तुएँ कैसे दूसरी जगहों पर पहुँचती है – यह पता लगाते हैं।

English

The learner—

- answers questions orally and in writing on a variety of texts.
- reads aloud stories and recites poems with appropriate pause, intonation and pronunciation.
- participates in different activities in English such as role play, poetry recitation, skit, drama, debate, speech, elocution, declamation, quiz, etc., organised by school and other such organisations.

- engages in conversations in English with family, friends and people from different professions such as shopkeeper, salesperson, etc., using appropriate vocabulary.
- responds to different kinds of instructions, requests, directions in varied contexts viz. school, bank, railway station, etc.
- speaks about excerpts, dialogues, skits, short films, news and debate on TV and radio, audio–video programmes on suggested websites.
- asks and responds to questions based on texts (from books or other resources) and out of curiosity.
- reads textual/non-textual materials in English/Braille with comprehension.
- identifies details, characters, main idea and sequence of ideas and events in textual /non-textual material.
- thinks critically, compares and contrasts characters, events, ideas, themes and relates them to life.
- reads to seek information in print/online, notice board, signboards in public places, newspaper, hoardings, etc.
- takes notes while teacher teaches/from books/from online materials.
- infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context.
- refers dictionary, thesaurus and encyclopedia to find meanings/ spelling of words while reading and writing.
- reads a variety of texts for pleasure, e.g., adventure stories and science fiction, fairy tales, biography, autobiography, travelogue, etc. (extensive reading).
- uses appropprite grammatical forms in communication (e.g., noun, pronoun, verb, determiners, time and tense, passivisation, adjective, adverb, etc.)
- organises sentences coherently in English/in Braille with the help of verbal and visual clues and with a sense of audience.
- writes formal letters, personal diary, list, email, SMS, etc.
- writes descriptions / narratives showing sensitivity to gender, environment and appreciation of cultural diversity.
- writes dialogues from a story and story from dialogues.
- visits a language laboratory.
- writes a Book Review.

कक्षा 8

हिंदी

बच्चे —

- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे —

पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।

- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों, जैसे— जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे—अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे—अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं– रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?
- विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे—कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे—वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे—शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
- अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में

बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं।

- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे—कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे—स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फ़िर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे—विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) कोई अनुभव लिखना।
- दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे—सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।
- विविध कलाओं, जैसे—हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे—कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।
- अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।
- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे—कविता, कहानी, निबंध आदि।

गणित

बच्चे—

- परिमेय संख्याओं में योग, अंतर, गुणन, तथा भाग के गुणों का एक पैटर्न द्वारा सामान्यीकरण करते हैं।
- दो परिमेय संख्याओं के बीच अनेक परिमेय संख्याएँ ज्ञात करते हैं।
- 2, 3, 4, 5, 6, 9 तथा 11 से विभाजन के नियम को सिद्ध करते हैं।
- संख्याओं का वर्ग, वर्गमूल, घन, तथा घनमूल विभिन्न तरीकों से ज्ञात करते हैं।
- पूर्णांक घातों वाली समस्याएँ हल करते हैं।
- चरों का प्रयोग कर दैनिक जीवन की समस्याएँ तथा पहेली हल करते हैं।
- बीजीय व्यंजकों को गुणा करते हैं, जैसे $(2x-5)(3x^2+7)$ का विस्तार करते हैं।
- विभिन्न सर्वसमिकाओं का उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए करते हैं।
- प्रतिशत की अवधारणा का प्रयोग लाभ तथा हानि की स्थितियों में छूट की गणना, जी.एस.टी. (GST), चक्रवृद्धि ब्याज की गणना के लिए करते हैं, जैसे—अंकित मूल्य तथा वास्तविक छूट दी गई हो तो छूट प्रतिशत ज्ञात करते हैं अथवा क्रय मूल्य तथा लाभ की राशि दी हो तो लाभ प्रतिशत ज्ञात करते हैं।
- समानुपात तथा व्युत्क्रमानुपात (direct and inverse proportion) पर आधारित प्रश्न हल करते हैं।

- कोणों के योग के गुणधर्म का प्रयोग कर चतुर्भुज के कोणों से संबंधित समस्याएँ हल करते हैं।
- समांतर चतुर्भुज के गुणधर्मों का सत्यापन करते हैं तथा उनके बीच तर्क द्वारा संबंध स्थापित करते हैं।
- 3D आकृतियों को समतल, जैसे—कागज़ के पन्ने, श्यामपट आदि पर प्रदर्शित करते हैं।
- पैटर्न के माध्यम से यूलर (Euler's) संबंध का सत्यापन करते हैं।
- पैमाना (स्केल) तथा परकार के प्रयोग से विभिन्न चतुर्भुज की रचना करते हैं।
- समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज के क्षेत्रफल का अनुमानित मान इकाई वर्ग ग्रिड/ग्राफ़ पेपर के माध्यम से करते हैं तथा सूत्र द्वारा उसका सत्यापन करते हैं।
- बहुभुज का क्षेत्रफल ज्ञात करते हैं।
- घनाभाकार तथा बेलनाकार वस्तुओं का पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन ज्ञात करते हैं।
- दंड आलेख तथा पाई आलेख बनाकर उनकी व्याख्या करते हैं।
- किसी घटना के पूर्व में घटित होने या पासे या सिक्कों की उछाल के आँकड़ों के आधार पर भविष्य में होने वाली ऐसी घटनाओं के घटित होने के लिए अनुमान (Hypothesize) लगाते हैं।

विज्ञान

बच्चे—

- पदार्थों और जीवों में गुणों, संरचना एवं कार्यों के आधार पर भेद करते हैं, जैसे—प्राकृतिक एवं मानव निर्मित रेशों, संपर्क और असंपर्क बलों, विद्युत चालक और विद्युत रोधक के रूप में द्रव पदार्थों, पौधों और जंतुओं की कोशिकाओं, पिंडज और अंडज जंतुओं में आदि।
- पदार्थों, जीवों और प्रक्रियाओं को अवलोकन योग्य गुणों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे—धातुओं और अधातुओं, खरीफ़ और रबी फ़सलों, उपयोगी और हानिकारक सूक्ष्मजीवों, लैंगिक और अलैंगिक प्रजनन, खगोलीय पिंडों, समाप्त होने वाले एवं अक्षय प्राकृतिक संसाधन आदि।
- प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने के लिये सरल छानबीन करते हैं, जैसे—दहन के लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं? हम अचार और मुरब्बों में नमक और चीनी क्यों मिलाते हैं? क्या द्रव समान गहराई पर समान दाब डालते हैं?
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं को कारणों से संबंधित करते हैं, जैसे—हवा में प्रदूषकों की उपस्थिति के कारण धूम-कोहरे का बनना; अम्ल वर्षा के कारण स्मारकों का क्षरण आदि।
- प्रक्रियाओं और परिघटनाओं की व्याख्या करते है, जैसे—मनुष्य और जंतुओं में प्रजनन; ध्वनि का उत्पन्न होना तथा संचरण; विद्युत धारा के रासायनिक प्रभाव; बहुप्रतिबिंबों का बनना, ज्वाला की संरचना आदि।
- रासायनिक अभिक्रियाओं, जैसे—धातुओं और अधातुओं की वायु, जल तथा अम्लों के साथ अभिक्रियाओं के लिए शब्द समीकरण लिखते हैं।

- आपतन और परावर्तन कोणों आदि का मापन करते हैं।
- सूक्ष्मजीवों, प्याज़ की झिल्ली, मानव गाल की कोशिकाओं आदि के स्लाइड तैयार करते हैं और उनसे संबंधित सूक्ष्म लक्षणों का वर्णन करते हैं।
- नामांकित चित्र/फ़्लो चार्ट बनाते हैं, जैसे— कोशिका की संरचना, आँख, मानव जनन, अंगों एवं प्रयोग संबंधी व्यवस्थाओं आदि।
- अपने परिवेश की सामग्रियों का उपयोग कर मॉडलों का निर्माण करते हैं और उनकी कार्यविधि की व्याख्या करते हैं, जैसे— इकतारा, इलेक्ट्रोस्कोप, अग्नि शामक यंत्र आदि।
- वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं, जैसे—अम्लीयता से निपटना, मिट्टी की जाँच एवं उसका उपचार, संक्षारण को रोकने के विभिन्न उपाय, कायिक प्रवर्धन के द्वारा कृषि, दो अथवा दो से अधिक विद्युत सेलों का विभिन्न विद्युत उपकरणों में संयोजन, विभिन्न आपदाओं के दौरान व उनके बाद उनसे निपटना, प्रदूषित पानी के पुनःउपयोग हेतु उपचारित करने की विधियाँ सुझाना आदि।
- वैज्ञानिक अन्वेषणों की कहानियों पर परिचर्चा करते हैं और उनका महत्त्व समझते हैं।
- पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रयास करते हैं, जैसे—संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करके; उर्वरकों और कीटनाशकों का नियंत्रित उपयोग करके; पर्यावरणीय खतरों से निपटने के सुझाव देकर आदि।
- डिज़ाइन बनाने, योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं।
- ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति जैसे मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं।

सामाजिक विज्ञान

बच्चे—

- कच्चे माल, आकार तथा स्वामित्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करते हैं।
- अपने क्षेत्र/राज्य की प्रमुख फ़सलों, कृषि के प्रकारों तथा कृषि पद्धतियों का वर्णन करते हैं।
- विश्व के मानचित्र पर जनसंख्या के असमान वितरण के कारणों की व्याख्या करते हैं।
- वनों की आग (दावानल), भूस्खलन, औद्योगिक आपदाओं के कारणों और उनके जोखिम को कम करने के उपायों का वर्णन करते हैं।
- महत्वपूर्ण खनिजों, जैसे—कोयला तथा खनिज तेल के वितरण को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
- पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों के असमान वितरण का विश्लेषण करते हैं।
- सभी क्षेत्रों में विकास को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों, जैसे—जल, मृदा, वन इत्यादि के विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

- ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फ़सलों, जैसे—गेहूँ, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
- विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के प्रकारों तथा विकास में संबंध स्थापित करते हैं।
- विभिन्न देशों / भारत / राज्यों की जनसंख्या को दंड आरेख (बार डायग्राम) द्वारा प्रदर्शित करते हैं।
- स्रोतों के इस्तेमाल, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त नामावली और व्यापक बदलावों के आधार पर 'आधुनिक काल' का 'मध्यकाल' और 'प्राचीनकाल' से अंतर करते हैं।
- इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी कैसे सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई बताते हैं।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव में अंतर बताते हैं, जैसे—'नील विद्रोह'।
- 19वीं शताब्दी में विभिन्न आदिवासी समाज के रूपों और पर्यावरण के साथ उनके संबंधों का वर्णन करते हैं।
- आदिवासी समुदायों के प्रति औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियों की व्याख्या करते हैं।
- 1857 के विद्रोह की शुरुआत, प्रकृति और फैलाव और इससे मिले सबक का वर्णन करते हैं।
- औपनिवेशिक काल के दौरान पहले से मौजूद शहरी केंद्रों और हस्तशिल्प उद्योगों के पतन और नए शहरी केंद्रों और उद्योगों के विकास का विश्लेषण करते हैं।
- भारत में नई शिक्षा प्रणाली के संस्थानीकरण के बारे में बताते हैं।
- जाति, महिला, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों और इन मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण करते हैं।
- कला के क्षेत्र में आधुनिक काल के दौरान हुई प्रमुख घटनाओं की रूपरेखा तैयार करते हैं।
- 1870 के दशक से लेकर आज़ादी तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार करते हैं।
- राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलावों का विश्लेषण करते हैं।
- भारत के संविधान के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण करते हैं।
- मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों को समुचित उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं।
- मौलिक अधिकारों की अपनी समझ से किसी दी गई स्थिति, जैसे—बाल अधिकार के उल्लंघन, संरक्षण और प्रोत्साहन की स्थिति को समझते हैं।
- राज्य सरकार और केंद्र सरकार के बीच अंतर करते हैं।
- लोकसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।

- राज्य/ संघ शासित प्रदेश के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचान सकते हैं और स्थानीय सांसद का नाम जानते हैं।
- कानून बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं (उदाहरणार्थ, घरेलू हिंसा से स्त्रियों का बचाव अधिनियम, सूचना का अधिकार अधिनियम, शिक्षा का अधिकार अधिनियम)।
- भारत में न्यायिक प्रणाली की कार्यविधि का कुछ प्रमुख मामलों का उदाहरण देकर वर्णन करते हैं।
- एक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ़.आई.आर.) दर्ज़ करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं।
- अपने क्षेत्र के सुविधा वंचित वर्गों की उपेक्षा के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।
- पानी, सफ़ाई, सड़क, बिजली, आदि जन-सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका की पहचान करते हैं।
- आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं।

English

The learner—

- responds to instructions and announcements in school and public places viz. railway station, market, airport, cinema hall, and act accordingly.
- introduces guests in English, interviews people by asking questions based on the work they do.
- engages in conversations in English with people from different professions such as bank staff, railway staff, etc., using appropriate vocabulary.
- uses formulaic/polite expressions to communicate such as 'May I borrow your book?', 'I would like to differ', etc.
- speaks short prepared speech in morning assembly.
- speaks about objects/events in the class/school environment and outside surroundings.
- participates in grammar games and kinaesthetic activities for language learning.
- reads excerpts, dialogues, poems, commentaries of sports and games speeches, news, debates on TV, Radio and expresses opinions about them.
- asks questions in different contexts and situations (e.g., based on the text/beyond the text/out of curiosity/while engaging in conversation using appropriate vocabulary and accurate sentences).
- participates in different events such as role play, poetry recitation, skit, drama, debate, speech, elocution, declamation, quiz, etc., organised by school and other such organisations.
- narrates stories (real or imaginary) and real life experiences in English.

- interprets quotations, sayings and proverbs.
- reads textual/non-textual materials in English/Braille with comprehension.
- identifies details, characters, main idea and sequence of ideas and events while reading.
- reads, compares, contrasts, thinks critically and relates ideas to life.
- infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context.
- reads a variety of texts for pleasure, e.g., adventure stories and science fiction, fairy tales, also non-fiction articles, narratives, travelogues, biographies, etc. (extensive reading).
- refers dictionary, thesaurus and encyclopedia as reference books for meaning and spelling while reading and writing.
- prepares a write-up after seeking information in print / online, notice board, newspaper, etc.
- communicates accurately using appropriate grammatical forms (e.g., clauses, comparison of adjectives, time and tense, active passive voice, reported speech, etc.)
- writes a coherent and meaningful paragraph through the process of drafting, revising, editing and finalising.
- writes short paragraphs coherently in English/Braille with a proper beginning, middle and end with appropriate punctuation marks.
- writes answers to textual / non-textual questions after comprehension / inference; draws character sketch, attempts extrapolative writing.
- writes email, messages, notice, formal letters, descriptions / narratives, personal diary, report, short personal / biographical experiences, etc.
- develops a skit (dialogues from a story) and story from dialogues.
- visits a language laboratory.
- writes a Book Review.